वेदों में गौ तत्त्व

*डॉ. अनुजा शर्मा

माता रूद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि।

(ऋग्वेद 8/101/15)

अर्थात् ऋग्वेद के आठवें मण्डल में कहा गया है कि गौ एकादश रूद्रों की माता, अष्ट वसुओं की कन्या और द्वादश आदित्यों की बहन है, जो कि अमृतरूप दुग्ध को देने वाली है।

सम्पूर्ण विश्व में 'गौ' एक महनीय, अमूल्य और कल्याणप्रद पशु है। गौ की महिमा का उल्लेख वेदादि सभी शास्त्रों में मिलता है। गो (गौ) भगवान् सूर्यदेव की एक प्रधान किरण का नाम है। सूर्यभगवान के उदय होने पर उनकी ज्योति, में ही अधिक मात्रा में समाविष्ट होती है। अतएव आर्यजाति इस पशु आयु और गो – ये तीनों किरणे स्धावन्–जडग्म समस्त प्राणियों में यथासम्भव न्यूनाधिक्य में प्रविष्ट होती है। परंतु इनमें सुर्यभगवान की 'गो' नाम की किरण केवल गौ– पशु को 'गौ' नाम से पुकारती है।

शुक्लयजुर्वेद में गौ और पृथ्वी– इन दोनों के सम्बन्ध में प्रश्न किया गया है कि "कस्य मात्रा न विद्यते?" (किसका परिमाण उपमा नही है) (शुक्ल यजुर्वेद 23/47)" इसका उतर दिया गया है– "गोस्तु मात्रा न विद्यते" (गौ का परिमाण उपमा नही है) (शुक्ल यजुर्वेद 23/48)' गौ और पृथ्वी दोनों गौ के ही दो स्वरूप है। इनमें कोई भेद नही है। गौर और पृथ्वी – इन दोनों में अभिभता है। ये दोनों ही परस्पर एक दूसरे की सहायिका और सहचरी है। मृत्यु लोक की आधार शक्ति 'पृथ्वी' है और देवलोक की आधार शक्ति 'गौ' है। पृथ्वी को 'भू लोक' कहते है और गौ को 'गो लोक' कहते है।

जिस प्रकार मनुष्यों के कुत्सित आचरणों को पृथ्वी माता सप्रेम सहन करती है उसी प्रकार गौ माता भी मनुष्यों के जीवन का आधार होती है उनके वाहन, निरोध एवं ताडन आदि कुत्सित आचरणों को सहन करती है। इसीलिएं वेदों में पृथ्वी और गौ को 'मही' शब्द से व्यवद्वत किया गया है मनुष्यों में भी जो सहनशील अर्थात क्षमी होते है, वे महान माने जाते है।

शास्त्रों में गौ को सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी कहा गया है। अतः गौ के दर्शन से समस्त देवताओं के दर्शन और समस्त तीर्थो की यात्रा करने का पुण्य प्राप्त होता है। गौओं की परिक्रमा करने से ही बृहस्पति सबके वन्दनीय, माधव (विष्णु) सबके पूज्य और इन्द्र ऐश्वर्यवान् हो गयें।

गौ के गोबर, गोमूत्र, गोघृत और गोदघि आदि सभी पदार्थ परम पावन, आरोग्यप्रद, तेजः, प्रद, आयुवर्धक तथा बलवर्धक माने जाते है। यही कारण है कि आर्य जाति के प्रत्येक श्रौत–स्मार्त शुभ कर्म में पच्चगव्य और पञ्चामृत का विधान अनादिकाल से प्रचलित और मान्य है। मानवजाति में जब बालक 'पेंदा होते है', तब उन्हे सर्वप्रथम मेधाजनन के लिए 'मधुधृते प्राशयति घृतं वा.' (पार, गृ, सू, 1/16/4) इस सूक्त के अनुसार मधु और गोघृत में सुवर्ण घिसकर वह पदार्थ बालक को चटाया जाता है, तत्पश्चात् उसे गौ का दूध पिलाया जाता है। अतएव गौ को

माता कहा जात है। गौ माता हमें आजीवन अपना अमृतमय दुग्ध पिलाकर हमारा इहलोक में पालन पोषण करती है और हमारी मृत्यु के बाद वह हमें स्वर्ग पहुचाती है, जैसा कि अथर्ववेद (18/3/4) मै भी कहा है–

'अयं ते गोपतिस्तं जुपस्व स्वर्ग लोकमधि रोहयैनम्।।

'धनं च गोधनं प्राहुः' के अनुसार विद्वानों ने 'गौ' को ही असली धन कहा है।

वेदों में गो महिमापरक अनेक मन्त्र उपलब्ध हैः

ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशुग्ड़ा अयासः।

अत्राह तदुरूगयस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि।। (ऋग्वेद 1/154/6)

'गो भक्तगण अश्विनीकुमार से प्रार्थना करते है' कि – है अश्विनीकुमार ! हम आपके उस गोलोक रूप निवास स्थान में जाना चाहते है जहाँ बड़ी–बड़ी सीगं वाली, सर्वत्र जानेवाली गौएँ निवास करती है। वहीं पर सर्वव्यापक विष्णुभगवान् का परमपद वैकुण्ढ प्रकाशित हो रहा है।

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः।। (शुक्लयुजुर्वद 1/4)

वह गौ यज्ञसम्बन्धी समस्त ऋत्विजों की तथा यजमान की आयु को बढ़ाने वाली है। वह गौ यज्ञ के समस्त कार्यो का सम्पादन करने वाली है। वह गौ यज्ञ के समस्त देवताओं का पोषण करने वाली है। अर्थात् दुरधादि हवि–पदार्थ देनेवाली है।

सः हितासि विश्वरूप्यूर्जा माविश गौपत्येन।। (शुक्लयजुर्वेद 3/22)

हे गौओं। तुम विश्वरूपवाली दुग्ध–घृतरूप हवि प्रदान करने के लिये यज्ञ कर्म में संगतिवाली हो। तुम अपने दुग्धदि रसो को पदान कर हमारा गो–स्वामित्व सर्वदा सुस्थिर रखों।

वीर विदेय तव देवि सन्दृशि।। (शुक्लयजुर्वेद 4/23)

हे मन्त्रपूत दिव्य गो! तुम्हारे सुन्दर दर्शन के महत्व से मैं बलवान पुत्र को प्राप्त करूँ।

क्षुमन्तं वाजः शतिनः सहस्त्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे।। (सामवेद, उत्तरार्चिक 6/86)

हम पुत्र पात्रादि सहित सैकड़ों हजारों की संख्या वाले धनों की और गौ आदि से युक्त अन्न की शीघ्र याचना करते है।

इमा या गावः स जनास इन्द्र।। (अथर्ववेद 4/21/5)

जिसके पास गौएँ रहती है वह तो एक प्रकार से इन्द्र ही है।

वशां देवा उप जीवन्ति वशां मनुष्या उत।

वशेदं सर्वमभवद्यावत्सुर्यो विपश्यति।। (अथर्ववेद 10/10/34)

वशा (वश में रहनेवाली) गौ के द्वारा प्राप्त गो– दुग्धादि पदार्थो से देवगण और मनुण्य गण जीवन प्राप्त करते है जहाँ तक सूर्यदेव का प्रकाश होता है, वहाँ तक गौ ही व्याप्त है अर्थात् यह समस्त ब्रह्माण्ड गौ के ही आधार पर स्थित है।

धेनुं सदन रयीणाम्। (अधर्ववेद 11/1/34)

गौ सम्पत्ति का घर है।

महाँस्वेव गोर्महिमा। (शतपथ्रब्राह्मण)

गौ की महिमा महान है।

इस प्रकार वेदों से लेकर समस्त धार्मिक ग्रन्थों मे और समस्तसम्प्रदायवादियों के धर्मग्रन्थ एवं प्राचीन अर्वाचीन ऋषि–महर्षि, आचार्य विद्वानों से लेकर आधुनिक विद्वानों तक सभी की सम्मत्ति में गोमाता का स्थान सर्वश्रेष्ठ और सर्वमान्य है।

गौ एक अमूल्य स्वर्गीय ज्योति है, जिसका निर्माण भगवान् ने मनुष्यों के कल्याणार्य आर्शिवाद रूप में पृथ्वीलोक में किया है। अतः इस पृथ्वीलोक में गोमाता मनुष्यों के लिए भगवान प्रसाद है।

शास्त्रों में गोरक्षार्थ 'गो–यज्ञ' भी एक मुख्य साधन कहा गया है वैदिक काल में बड़े–बड़े 'गो–यज्ञ' और गौ–महोत्सव हुआ करते थे। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गोवर्धन–पूजन के अवसर पर गो–यज्ञ कराया था।

गावै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।

गावोडस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततों वयम्।।

(महाभारत अनुपर्व 78/24)

गावो ममाग्रतो निव्यं गावः पृष्ठत एवं च।

गावो में सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

(महाभारत अनुपर्व 80/3)

तात्पर्य यह है कि मैं सदा गौओं के दर्शन करूँ और गोएँ मुझ पर कृपा दृष्टि करे। गौएँ हमारी है और हम गोओ के है जहाँ गौएँ रहे वहा हम रहे। गोएँ मेरे आगे रहे और पीछे। गौएँ मेरे चारों ओर रहें और मैं गोओं के बीच में निवास करूँ।

***सह–आच**
संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, टोंक (राजस्थान)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 शुक्ल यजुर्वेद
2. ऋग्वेद
3. अथर्ववेद
4. सामवेद
5. महाभारत

6. शतपथ ब्राह्मण